



(2)

पर पट्टे कि विवाह अर्थात् प्रायश्चित्त रोक अर्थात्  
की सहकारिता व पैसा अर्थात् कि अर्थात् दोनों पक्ष  
मा 1/2 अर्थात् आधा - आधा हिस्सा बनना है। पट्टे  
उक्त शर्त का बंधन नहीं हुआ है। इसलिए उक्त वाद  
R.T. Act की धारा - 183 की अन्तर्गत मैनेटेबल नहीं है।  
अब वाद प्रायश्चित्त खातिर किया जाता है। प्रामाणिकी  
सम्बन्ध में कुछ ही उर धारणा पर है।

विशेष अज्ञानता

लक्ष्मी नारायण  
2/1/1973